

## इलाहाबाद विकास प्राधिकरण

पत्रांक ४०/प्र०३०(त०स०) / जोन-२ / प्रस्ताव / २०१४-१५ दिनांक ११/११/२०१४

अन्वयिति-एवं

यह अनुग्रहीत ३००५ नाम नियोनन तथा विकास अविनियोग १९७३ की पारा १४ व १५ के अन्वयों त इ जाती है, जिन्हें अधी घटना समझना चाहिए है कि उस मूले के सम्बन्ध में लिखा १४ अवधारणिक/आवाहीय भवन सामग्रिय स्टीरीडूप विकास त रखा है, इसके द्वितीय प्रकार या किसी स्थानीय निकाय या इसका स्थानीय अधिकारी या व्यक्ति इसका जन्मे के नालिकाएँ अधिकारों ग्र कियो का कोई असर रहेगा अर्थात् यह जन्मने किसी के नालिकाएँ या स्थानीय के अधिकार के भेदभाव और तब तक रहेगी।

श्री सुरेश कुमार यादव पुनर ३८० गोला नाम्य यादव द्वारा उत्तर रो-५१/३५ एकांशीय बालू देव हलाकाराय के नोन शंखा (2) के अन्तर्गत व्यवसायिक/आत्मीय उत्तर भास्त्रिय के निम्नांकि अनुसारे देख दरक्षिण उत्तर नान्देश्वर की अधीक्षणी/निर्गमन निम्नांकि उत्तरवासी के अधीन प्रदान की जाती है :

- उपरोक्त नाम सिविल एवं दिक्षिण अधिनियम १९७३ की घासा १५२ (१) के सहितानों के अनुस्तुत नूरखा प्राप्त होने वे प्रथम हैं आमोन/अधिमें लिखा जायेगा। नवानि निर्माण इन वित्त संसदीयों २००८ में उपलब्ध हुए। २.१६ एवं ३.१८ में विवरित प्रक्रिया पूर्व कर वित्त भ्रम प्रभाव करना आवश्यक है।
  - इति स्वीकृति अनिवार्य (Provisional) स्थीकृति के रूप में जारी। निर्माण पूर्व होने के प्रारूप, चर्ची आवश्यक Mandatorily Clearances/N.O.C की इसी पूर्ण करने के प्रश्नावाले वर्तमान ने जारी ज्ञात करके।
  - खेल -५ ४X3 फीट के एक बैंड इन्डियन प्राधिकरण द्वारा स्वीकृत मानविक रामगढ़ी निवारण अंगठे करना आवश्यक होता। जिसके लिए केंद्र/इलेक्ट्रोनिक के कर्म का नाम गो आयोजित हो।
  - खेल -५ ५ वूच लागान होना तथा पूर्ण को हस्ताना रखने का सामिल आवेदक यह होगा।
  - रखन का अधिग्राह/उपयोग स्वीकृत प्रत्याकृति के अनुसार ही करना होगा। जिसमें वेल्सेन ने स्टोर, रिटल नर्किंग, द्वारा एवं द्वितीय तल पर अनिवार्य शांति-एवं दूरीय तल पर आवश्यक निर्माण आवश्यक किया जा रहा है।
  - अद्वारा इन सुधारों के परिपेक्ष में नवानि आवश्यक, नवानि निर्माण एवं स्थीकृति के बहुत कोई देखत/अतिवाद लाईकॉमिट किये जाते हैं तो यहां अनुपलन/शुरूआत किया जाना दायरकारी होगा।
  - मानविक न्याय लव ने कोई दाव होने वाला रत्नाल छोड़ने की रेखांति ने इतना स्थीकृत नानोट न्याय लव के नियम के अधीन होता। यह स्थीकृत गृ-रक्षणिल का अधिकार प्राप्तन नहीं करते हैं मूल सामिल सम्बन्धों कोई भी वैश्वान न्यायालय/प्राधिकारी द्वारा ही निर्दिष्ट किया जा सकता है।
  - गोपेन नाम पर जारी लायानदेश - नियमों का पालन करना होना तथा प्राधिकरण नहीं लोई इच्छा अर्होंगत करत है तो उस पक्ष को जान करना होगा।
  - गवि जगद्वक द्वारा लोई नहव्याहूः पूर्वनि छिन्नी (यो) है शब्द गलत सूखना ही रही है तो ३०.३ नाम नियोजन एवं नियम अधिनियम -१९७३ की घासा १५ (१) के अनुसार मानविक निर्माण योग्य होगा।
  - गह स्थीकृत पत्र केवल नींव दर्श की अवधि के लिए है।
  - नलन निर्माण ने यदि नातों परे रहने की वृद्धी वाधा सहक या नाली ले किसी ताप (जो गलन के अंत ताप, पूर्ण भार जलना लायक अकाल के पालन दर्क नहीं हो) लो छानि पहचाने तो गुरुरकारी नीरापद हो जाने पर १५ दिनों के भीतर अथवा दिनों के भीतर अथवा दिविलाल ने एक लिपित रूपना हाता और इन्हें कक्ष पर उठने ही उसे अपने रखने से नहीं रखना अवश्यक नहीं। अवश्या जिल्ले विकास प्रायोगिकों के सामूहिक ही भाषा, में कह देना।
  - गह नियमों के समान इकता भी धान रखना होना कि गायत्री वेदुर अधिनियम १९५६ (इन्हें वेदुरलीटी फूला १३६५) नियम ८२ का उल्लंघन किसी भी दाना में न होने चाहिए। वह दिक्षार प्राइवेटर्स को जानवाही ने ऐसे नामों परों यांत्रों जो नह ऐसे नियमों लो टोक अधिका होता। सकता है।
  - जानवाही लो नियम न्याय द्वारा दिल्ली प्राधिकरण के राज्यों ही भाषा, में कह देना।
  - जानवाही लो नियम न्याय द्वारा दिल्ली प्राधिकरण के राज्यों ही भाषा में न होने चाहिए। वह दिक्षार प्राइवेटर्स को जानवाही ने नामों द्वारा दिल्ली प्राधिकरण के राज्यों ही भाषा में कह देना।
  - दाँड़ नियमों पर सहृदय भान का उल्लंघन होता गया तो नियमकारों को दी गई स्वीकृति रद्द समझी जायेगी और विषय गण नियम अनुशिल्प गोपेत रद्द तक अधिनियम की घासा २७ (१) के अन्तर्गत नामवाही कानून की जाएगी।

~~प्रतिक्रिया~~  
प्रतिक्रिया

**प्रभारी श्रीमान् ५११०-२**

